अध्याय 9: डायरी का एक पन्ना

विषय-सूची 6 प्रश्नावली · 19 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1	मौखिक प्रश्न	5 प्रश्न
प्रश्नावली 9.2	लिखित (क) — 25-30 शब्दों में	5 प्रश्न
प्रश्नावली 9.3	लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में	4 प्रश्न
प्रश्नावली 9.4	लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए	2 प्रश्न
प्रश्नावली 9.5	भाषा अध्ययन — वाक्य प्रकार	2 प्रश्न
प्रश्नावली 9.6	भाषा अध्ययन — संधि	1 प्रश्न

प्रश्नावली 9.1 — मौखिक प्रश्न

प्रश्न 1

कलकत्तावासियों के लिए 26 जनवरी 1931 का दिन क्यों महत्त्वपूर्ण था?

हल

26 जनवरी 1931 को कलकत्तावासियों ने खुलेआम स्वतंत्रता दिवस मनाया।
इस दिन सुभाष बाबू के नेतृत्व में जुलूस निकला, मोनुमेंट के नीचे झंडा फहराया गया और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी गई।
पुलिस के दमन के बावजूद हजारों लोगों ने — विशेषकर स्त्रियों ने — सक्रिय भाग लिया।
यह दिन ब्रिटिश शासन को खुला चैलेंज देने और बंगाल में स्वतंत्रता आंदोलन की शक्ति सिद्ध करने के कारण महत्त्वपूर्ण था।

उत्तर: 26 जनवरी 1931 को कलकत्तावासियों ने पुलिस के दमन की परवाह न करते हुए सुभाष बाबू के नेतृत्व में स्वतंत्रता दिवस मनाया और मोनुमेंट पर झंडा फहराया — यही इस दिन की ऐतिहासिक महत्ता थी।

प्रश्न 2

सुभाष बाबू के जुलूस का भार किस पर था?

हल

पाठ के अनुसार: 'सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था पर यह प्रबंध कर चुका था।'
अर्थात् जुलूस की व्यवस्था और संगठन का उत्तरदायित्व पूर्णोदास पर था।
दो-तीन बजे पूर्णोदास को पकड़ लिया गया था, फिर भी उन्होंने पहले ही सारी व्यवस्था कर दी थी।

उत्तर: सुभाष बाबू के जुलूस का भार पूर्णोदास पर था।

प्रश्न 3

विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर क्या प्रतिक्रिया हुई?

हल

श्रद्धानंद पार्क में बंगाल प्रांतीय विद्यार्थी संघ के मंत्री अविनाश बाबू ने झंडा गाड़ा।
इस पर पुलिस ने उनको पकड़ लिया तथा और लोगों को मारा या हटा दिया।

उत्तर: अविनाश बाबू के झंडा गाड़ने पर पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया और वहाँ उपस्थित अन्य लोगों को मारा या हटा दिया।

प्रश्न 4

लोग अपने-अपने मकानों व सार्वजनिक स्थलों पर राष्ट्रीय झंडा फहराकर किस बात का संकेत देना चाहते थे?

हल

राष्ट्रीय झंडा फहराना स्वतंत्रता की माँग और राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक था।
लोग यह संकेत देना चाहते थे कि वे ब्रिटिश शासन को स्वीकार नहीं करते और स्वराज्य चाहते हैं।
पाठ में वर्णित है: 'ऐसा मालूम होता था कि मानो स्वतंत्रता मिल गई हो' — झंडा फहराना स्वतंत्रता की भावनात्मक घोषणा थी।

उत्तर: राष्ट्रीय झंडा फहराकर लोग यह संकेत देना चाहते थे कि वे अंग्रेजी शासन को नहीं मानते और पूर्ण स्वराज्य चाहते हैं।

प्रश्न 5

पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को क्यों घेर लिया था?

हल

पुलिस कमिश्नर का नोटिस निकल चुका था कि निर्धारित धाराओं के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती।
पुलिस को आशंका थी कि स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में मोनुमेंट के नीचे और अन्य खुले मैदानों में बड़ी सभाएँ होंगी।
इसलिए पुलिस ने बड़े-बड़े पार्कों तथा मैदानों को सवेरे से ही घेर लिया ताकि भीड़ इकट्ठी न हो सके और सभा न की जा सके।

उत्तर: पुलिस ने पार्कों और मैदानों को इसलिए घेरा ताकि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर कोई सार्वजनिक सभा या जमाव न हो सके।

प्रश्नावली 9.2 — लिखित (क) — 25-30 शब्दों में

प्रश्न 1

26 जनवरी 1931 के दिन को अमर बनाने के लिए क्या-क्या तैयारियाँ की गईं?

हल

इस दिन को यादगार बनाने के लिए व्यापक तैयारियाँ की गई थीं:
— केवल प्रचार पर दो हजार रुपये खर्च किए गए।
— सभी कार्यकर्ताओं के घर-घर जाकर उन्हें समझाया और तैयार किया गया।
— बड़े बाजार के प्रायः सभी मकानों पर राष्ट्रीय झंडे फहराए गए।
— मकानों को भव्य रूप से सजाया गया।
— फोटोग्राफी का काफी प्रबंध किया गया।
— स्त्री समाज ने अपनी अलग तैयारियाँ कीं और जुलूस निकालने की योजना बनाई।
— मोनुमेंट के नीचे ठीक 4 बजकर 24 मिनट पर झंडा फहराने और स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ने का कार्यक्रम तय किया गया।

उत्तर: इस दिन के लिए प्रचार पर दो हजार रुपये खर्च किए गए, मकानों पर झंडे फहराए गए, कार्यकर्ताओं को घर-घर जाकर तैयार किया गया और मोनुमेंट पर 4:24 बजे झंडे के साथ प्रतिज्ञा का कार्यक्रम निश्चित किया गया।

प्रश्न 2

'आज जो बात थी वह निराली थी' — किस बात से पता चल रहा था कि आज का दिन अपने आप में निराला है? स्पष्ट कीजिए।

हल

यह दिन इसलिए निराला था क्योंकि:
— कानून भंग आंदोलन शुरू होने के बाद पहली बार इतनी बड़ी सभा खुले मैदान में की गई।
— यह 'ओपन लड़ाई' थी — पुलिस कमिश्नर के नोटिस के बावजूद सभा का खुला चैलेंज दिया गया।
— हजारों आदमी टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूम रहे थे।
— स्त्रियों की असाधारण भागीदारी थी।
— पुलिस के डंडे और गिरफ्तारियों के बावजूद लोगों का उत्साह कम नहीं हुआ।

उत्तर: पुलिस कमिश्नर की मनाही के बाद भी खुले मैदान में हजारों लोगों की उपस्थिति, स्त्रियों की बड़ी भागीदारी और प्रशासन को सीधी चुनौती देने से पता चलता था कि आज का दिन निराला था।

प्रश्न 3

पुलिस कमिश्नर के नोटिस और कौंसिल के नोटिस में क्या अंतर था?

हल

पुलिस कमिश्नर का नोटिस: निर्धारित धाराओं के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती — इसे मनाही का नोटिस था।
कार्यकर्ताओं को इंस्पेक्टरों द्वारा सूचित किया गया कि सभा में भाग लेने पर दोषी माने जाएँगे।
कौंसिल का नोटिस: मोनुमेंट के नीचे ठीक चार बजकर चौबीस मिनट पर झंडा फहराया जाएगा, स्वतंत्रता की प्रतिज्ञा पढ़ी जाएगी और सर्वसाधारण की उपस्थिति आवश्यक है — यह आह्वान का नोटिस था।
अर्थात् एक नोटिस अंग्रेज सरकार का दमनकारी आदेश था और दूसरा भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों का खुला आह्वान।

उत्तर: पुलिस कमिश्नर का नोटिस सभा पर रोक और दंड की चेतावनी था, जबकि कौंसिल का नोटिस मोनुमेंट पर 4:24 बजे झंडारोहण और प्रतिज्ञा का सार्वजनिक आह्वान था।

प्रश्न 4

धर्मतल्ले के मोड़ पर आकर जुलूस क्यों टूट गया?

हल

सुभाष बाबू की गिरफ्तारी के बाद स्त्रियों ने जुलूस बनाकर आगे बढ़ना जारी रखा।
पुलिस ने पहले कुछ समय के लिए डंडे चलाना बंद किए, फिर से डंडे चलाने शुरू कर दिए।
भीड़ अधिक होने के कारण बहुत आदमी घायल हुए।
धर्मतल्ले के मोड़ पर आते-आते पुलिस के दमन के कारण जुलूस टूट गया और करीब 50-60 स्त्रियाँ वहीं मोड़ पर बैठ गईं।
पुलिस ने उन सभी को पकड़कर लालबाजार भेज दिया।

उत्तर: धर्मतल्ले के मोड़ पर पुलिस के लाठी प्रहार और दमन के कारण जुलूस टूट गया और लगभग 50-60 स्त्रियाँ वहीं बैठ गईं, जिन्हें बाद में लालबाजार भेज दिया गया।

प्रश्न 5

डॉ. दासगुप्ता जुलूस में घायल लोगों की देख-रेख तो कर ही रहे थे, उनके फोटो भी उतरवा रहे थे। उन लोगों के फोटो खींचने की क्या वजह हो सकती थी? स्पष्ट कीजिए।

हल

डॉ. दासगुप्ता घायल लोगों का उपचार करने के साथ उनके फोटो भी उतरवा रहे थे।
फोटो खींचने की संभावित वजहें:
— ब्रिटिश पुलिस के अत्याचार का प्रमाण एकत्र करना ताकि अदालत में या जनता के बीच सच्चाई सामने आ सके।
— घायलों की संख्या और चोटों की गंभीरता का दस्तावेज़ीकरण करना।
— स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास के लिए ऐतिहासिक साक्ष्य सुरक्षित रखना।
— देश और दुनिया में ब्रिटिश दमन को उजागर करने के लिए इन फोटो का उपयोग किया जा सकता था।

उत्तर: डॉ. दासगुप्ता ब्रिटिश पुलिस के अत्याचार का प्रमाण एकत्र करने और इसे ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में सुरक्षित रखने के लिए घायलों के फोटो उतरवा रहे थे।

प्रश्नावली 9.3 — लिखित (ख) — 50-60 शब्दों में

प्रश्न 1

सुभाष बाबू के जुलूस में स्त्री समाज की क्या भूमिका थी?

हल

26 जनवरी 1931 के जुलूस में स्त्री समाज की भूमिका असाधारण और वीरतापूर्ण थी:
— स्त्री समाज ने अपनी तैयारी स्वयं की और जगह-जगह से जुलूस निकाले।
— मोनुमेंट की सीढ़ियों पर चढ़कर स्त्रियों ने झंडा फहराया और घोषणा पढ़ी।
— प्रायः सबके पास झंडा था।
— पुलिस के लाठी प्रहार के बावजूद स्त्रियाँ डिगी नहीं।
— धर्मतल्ले के मोड़ पर लगभग 50-60 स्त्रियाँ बैठ गईं और गिरफ्तार हो गईं।
— विमल प्रतिभा के नेतृत्व में एक दल बहू बाजार तक गया।
— कुल 105 स्त्रियाँ गिरफ्तार हुईं — कलकत्ता के इतिहास में एक दिन में इतनी स्त्रियों की गिरफ्तारी पहली बार हुई थी।

उत्तर: स्त्री समाज ने जुलूस में बढ़-चढ़कर भाग लिया, मोनुमेंट पर झंडा फहराया, पुलिस की लाठियों का सामना किया और 105 स्त्रियों ने गिरफ्तारी दी — यह कलकत्ता के इतिहास में अभूतपूर्व था।

प्रश्न 2

जुलूस के लालबाजार आने पर लोगों की क्या दशा हुई?

हल

वृजलाल गोयनका झंडा लेकर वंदे मातरम् बोलते हुए मोनुमेंट की ओर इतने जोर से दौड़े कि स्वयं गिर पड़े।
एक अंग्रेज घुड़सवार ने उन्हें लाठी मारी, फिर कुछ दूर ले जाकर छोड़ दिया।
इसके बाद वे स्त्रियों के जुलूस में शामिल हो गए, वहाँ भी छोड़े गए।
तब उन्होंने दो सौ आदमियों का जुलूस बनाकर लालबाजार गए और वहाँ गिरफ्तार हो गए।
मदालसा को भी पकड़ा गया; उसे थाने में भी मारा गया।
लालबाजार लॉकअप में स्त्रियों की संख्या 105 थी।
रात नौ बजे सभी स्त्रियों को छोड़ दिया गया।

उत्तर: लालबाजार आने पर वृजलाल गोयनका समेत अनेक लोग गिरफ्तार हुए, मदालसा को थाने में भी मारा गया और 105 स्त्रियाँ लॉकअप में रखी गईं जिन्हें रात नौ बजे छोड़ा गया।

प्रश्न 3

'जब से कानून भंग का काम शुरू हुआ है तब से आज तक इतनी बड़ी सभा ऐसे मैदान में नहीं की गई थी और यह सभा तो कहना चाहिए कि ओपन लड़ाई थी।' यहाँ पर कौन से और किसके द्वारा लागू किए गए कानून को भंग करने की बात कही गई है? क्या कानून भंग करना उचित था? पाठ के संदर्भ में अपने विचार प्रकट कीजिए।

हल

यहाँ ब्रिटिश सरकार द्वारा लागू उस कानून की बात है जिसके अनुसार सार्वजनिक सभा करना निषिद्ध था।
पुलिस कमिश्नर ने स्पष्ट नोटिस जारी किया था कि निर्धारित धाराओं के अनुसार कोई सभा नहीं हो सकती।
भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों ने इस कानून को तोड़कर मोनुमेंट के नीचे खुला सार्वजनिक समारोह किया।
क्या यह उचित था? पाठ के संदर्भ में हाँ, क्योंकि:
— यह कानून अन्यायपूर्ण था, उपनिवेशी शासन की देन था।
— महात्मा गांधी का सत्याग्रह और अहिंसक सविनय अवज्ञा आंदोलन ऐसे अन्यायी कानूनों को तोड़ने पर आधारित था।
— स्वतंत्रता का स्वप्न साकार करने के लिए ऐसे दमनकारी कानूनों को चुनौती देना आवश्यक था।

उत्तर: यहाँ ब्रिटिश सरकार के उस कानून को भंग करने की बात है जो सार्वजनिक सभाओं पर रोक लगाता था। पाठ के संदर्भ में यह कानून भंग उचित था क्योंकि यह अन्यायपूर्ण उपनिवेशी कानून था और सत्याग्रह आंदोलन का मूल सिद्धांत ऐसे कानूनों की अहिंसक अवज्ञा था।

प्रश्न 4

बहुत से लोग घायल हुए, बहुतों को लॉकअप में रखा गया, बहुत-सी स्त्रियाँ जेल गईं, फिर भी इस दिन को अपूर्व बताया गया है। आपके विचार में यह सब अपूर्व क्यों है? अपने शब्दों में लिखिए।

हल

यह दिन अपूर्व इसलिए था क्योंकि:
— कानून भंग आंदोलन के बाद पहली बार खुले मैदान में इतनी बड़ी सभा की गई।
— पुलिस कमिश्नर के नोटिस के बाद भी ब्रिटिश शासन को सीधी और खुली चुनौती दी गई।
— स्त्रियों ने अभूतपूर्व साहस दिखाया — 105 स्त्रियों की एक साथ गिरफ्तारी कलकत्ता में पहले कभी नहीं हुई थी।
— लोग लाठियाँ खाकर भी झुके नहीं, वंदे मातरम् बोलते रहे।
— इस दिन बंगाल और कलकत्ता पर लगा वह कलंक धुल गया कि वहाँ स्वतंत्रता आंदोलन में काम नहीं होता।
— समूचे देश को यह संदेश मिला कि एक संगठित समाज संकल्प ले तो कुछ भी असंभव नहीं।

उत्तर: यह दिन अपूर्व था क्योंकि पुलिस के दमन के बावजूद हजारों लोगों ने खुले चैलेंज के साथ स्वतंत्रता दिवस मनाया, 105 स्त्रियों ने गिरफ्तारी दी, और बंगाल पर लगा 'निष्क्रियता' का कलंक धुल गया।

प्रश्नावली 9.4 — लिखित (ग) — आशय स्पष्ट कीजिए

प्रश्न 1

आशय स्पष्ट कीजिए — 'आज तो जो कुछ हुआ वह अपूर्व हुआ है। बंगाल के नाम या कलकत्ता के नाम पर कलंक था कि यहाँ काम नहीं हो रहा है वह आज बहुत अंश में धुल गया।'

हल

यह कथन लेखक सीताराम सेकसरिया ने 26 जनवरी 1931 की डायरी में लिखा है।
आशय: उस समय आम धारणा थी कि बंगाल और कलकत्ता स्वतंत्रता आंदोलन में पिछड़ रहे हैं, अन्य प्रांतों की तरह यहाँ कोई सक्रिय भागीदारी नहीं है।
लेकिन 26 जनवरी 1931 को हजारों लोगों की भीड़, स्त्रियों की अभूतपूर्व भागीदारी, पुलिस दमन के सामने अटल रहने का साहस और 105 स्त्रियों सहित अनेक लोगों की गिरफ्तारी ने यह सिद्ध कर दिया कि कलकत्ता भी पूरे जोश से स्वाधीनता संग्राम में भाग ले सकता है।
इस प्रकार उस दिन की घटनाओं ने बंगाल/कलकत्ता की 'निष्क्रियता' के कलंक को बहुत हद तक धो दिया।

उत्तर: इस कथन का आशय है कि 26 जनवरी 1931 की घटनाओं ने बंगाल और कलकत्ता पर लगे उस कलंक को काफी हद तक मिटा दिया जिसके अनुसार वहाँ स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी नहीं थी।

प्रश्न 2

आशय स्पष्ट कीजिए — 'खुला चैलेंज देकर ऐसी सभा पहले नहीं की गई थी।'

हल

आशय: कानून भंग आंदोलन के इतिहास में यह पहली बार था जब स्वतंत्रता सेनानियों ने ब्रिटिश प्रशासन को एक सार्वजनिक और खुला चैलेंज देकर सभा का आयोजन किया।
पहले की सभाएँ छिपकर या सीमित दायरे में होती थीं, किंतु इस बार:
— पुलिस कमिश्नर के निषेधाज्ञा-नोटिस के बाद भी कौंसिल ने नोटिस निकाला कि मोनुमेंट पर ठीक 4:24 बजे झंडा फहराया जाएगा।
— यह सार्वजनिक घोषणा एक खुली चुनौती थी।
— इस चुनौती को हजारों लोगों ने स्वीकार किया और मैदान में उतरे।
— ऐसी निडर और खुली लड़ाई का यह पहला अवसर था।

उत्तर: इस कथन का आशय है कि पुलिस की मनाही के बाद भी सार्वजनिक घोषणापत्र के ज़रिए ब्रिटिश प्रशासन को सीधी और खुली चुनौती देकर सभा आयोजित करने का यह पहला उदाहरण था।

प्रश्नावली 9.5 — भाषा अध्ययन — वाक्य प्रकार

प्रश्न 1

निम्नलिखित वाक्यों को सरल वाक्यों में बदलिए — (क) दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार गया और वहाँ पर गिरफ्तार हो गया। (ख) मैदान में हजारों आदमियों की भीड़ होने लगी और लोग टोलियाँ बना-बनाकर मैदान में घूमने लगे। (ग) सुभाष बाबू को पकड़ लिया गया और गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप में भेज दिया गया।

हल

(क) संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य में:
दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार जाकर गिरफ्तार हो गया।

(ख) संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य में:
मैदान में हजारों आदमी टोलियाँ बना-बनाकर घूमने लगे।

(ग) संयुक्त वाक्य को सरल वाक्य में:
सुभाष बाबू को पकड़कर गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप भेज दिया गया।

उत्तर: (क) दो सौ आदमियों का जुलूस लालबाजार जाकर गिरफ्तार हो गया। (ख) मैदान में हजारों आदमी टोलियाँ बना-बनाकर घूमने लगे। (ग) सुभाष बाबू को पकड़कर गाड़ी में बैठाकर लालबाजार लॉकअप भेज दिया गया।

प्रश्न 2

'बड़े भाई साहब' पाठ में से भी दो-दो सरल, संयुक्त और मिश्र वाक्य छाँटकर लिखिए।

हल

सरल वाक्य (उदाहरण — 'बड़े भाई साहब' से):
1. वे मुझसे पाँच साल बड़े थे।
2. मैं खेलकूद में जुट जाता था।

संयुक्त वाक्य (उदाहरण — 'बड़े भाई साहब' से):
1. मेरा जी पढ़ने में बिल्कुल न लगता था, पर डर के मारे बैठा रहता था।
2. भाई साहब दिन भर किताब खोले बैठे रहते, पर खेलते-कूदते लड़कों को देखते जाते।

मिश्र वाक्य (उदाहरण — 'बड़े भाई साहब' से):
1. जब मैं आता तो भाई साहब ज़रूर मुझे उपदेश देते।
2. मुझे डर था कि कहीं भाई साहब नाराज़ न हों।

उत्तर: सरल: (1) वे मुझसे पाँच साल बड़े थे। (2) मैं खेलकूद में जुट जाता था। संयुक्त: (1) मेरा जी पढ़ने में न लगता था, पर डर से बैठा रहता था। मिश्र: (1) जब मैं आता तो भाई साहब उपदेश देते।

प्रश्नावली 9.6 — भाषा अध्ययन — संधि

प्रश्न 1

नीचे दिए गए शब्दों की संधि कीजिए — 1. श्रद्धा + आनंद = 2. प्रति + एक = 3. पुरुष + उत्तम = 4. झंडा + उत्सव = 5. पुनः + आवृत्ति = 6. ज्योतिः + मय =

हल

1. श्रद्धा + आनंद = श्रद्धानंद
(स्वर संधि: 'आ' + 'आ' = 'आ' — दीर्घ स्वर संधि)

2. प्रति + एक = प्रत्येक
(स्वर संधि: 'इ' + 'ए' = 'य' — यण् संधि)

3. पुरुष + उत्तम = पुरुषोत्तम
(स्वर संधि: 'अ' + 'उ' = 'ओ' — गुण संधि)

4. झंडा + उत्सव = झंडोत्सव
(स्वर संधि: 'आ' + 'उ' = 'ओ' — गुण संधि)

5. पुनः + आवृत्ति = पुनरावृत्ति
(विसर्ग संधि: 'ः' + 'आ' → 'र' + 'आ' = 'रा')

6. ज्योतिः + मय = ज्योतिर्मय
(विसर्ग संधि: 'ः' + 'म' → 'र्' — विसर्ग का 'र' में परिवर्तन)

उत्तर: 1. श्रद्धानंद, 2. प्रत्येक, 3. पुरुषोत्तम, 4. झंडोत्सव, 5. पुनरावृत्ति, 6. ज्योतिर्मय